गरीबों के विकास का सही रास्ता

स्वयं सहायता समूह

नाबार्ड द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम स्वयं सहायता समूह को खड़ा करने का काम NOTS द्वारा कानपुर नगर में किया जा रहा है। इस पत्र के माध्यम से स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी देकर जागरूक करना हमारी पहली जिम्मेदारी है। किसानों से आग्रह है कि इस क्रमिक जानकारी को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी तथा अपने समाज की उन्नति की अग्रसर हों। पत्र के प्रत्येक अंक में आपको क्रमशः जानकारी उपलब्ध कराते रहेंगे।

सौरभ गुप्ता (संपर्क करें – 9889236514, 9935608580)

1. स्वयं सहायता समूह क्या है ?

अशिक्षा, कमजोर सेहत और सामाजिक दुराव से गरीबों की समस्याएं हमेशा बढ़ती हैं। उनके पास एक ही पूंजी होती है और वह है उनका श्रम। अभी तक उनके लिए आशा की कोई किरण नहीं थी, परन्तु गत कुछ वर्षों से नाबार्ड ने एक ऐसी कार्य योजना लागू कीहै जिससे यह तय है कि लाखों लोगों के भाग्य में नया सूर्योदय अवश्य होगा।

स्वयं सहायता समूह ऐसे निर्धन ग्रामीणों का एक समूह है, जिनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति लगभग एक जैसी है। यह लोग अपनी इच्छा से एक समूह में संगठित होकर नियमित रूप से रूपये 10, 20 या उससे ज्यादा बचत करके जरूरतमंद सदस्यों के साथ ऋण का लेन-देन (बीमारी के इलाज, कृषि कार्य, शादी, व्यवसाय आदि के लिए) करते हैं। हर सप्ताह या 15 दिन या हर माह बैठक में बचत की राशि सदस्यों द्वारा जमा की जाती है तथा ऋण का लेन देन किया जाता है।

2. स्वयं सहायता समूह क्यों बनाएं ? समूह सदस्यों का लाभ ?

☞ जैसे बूंद–बूंद से घड़ा भरता है वैसे ही सभी सदस्यों की थोड़ी–थोड़ी बचत इकट्ठी होकर बड़ी राशि बन जाती है। बचत ही विकास का पहला कदम है।

☞ नियमित बचत द्वारा सदस्यों के आर्थिक स्तर में सुधार व सहायोग की भावना, आपसी विश्वास तथा स्वावलम्बन में बृद्धि संभव है।

☞ छोटे ऋण का समूह से आसानी से प्राप्त होना। ऋण किसी भी कार्य के लिए हो सकता है। बैंक से ऋण मिलने में आसानी।

☞ आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के निराकरण में समूह द्वारा मार्गदर्शन।

☞ आंतरिक ऋण से प्राप्त ब्याज का लाभ सभी सदस्यों को।

बैंकों को लाभ :

☞ बैंकिंग को अधिक लोगों तक बिना कोई अतिरिक्त लागत के पहुँचाना।

☞ अच्छी वसूली–सामूहिक दबाव से समूह सदस्य द्वारा तत्परता से ऋण वापसी।

☞ सदस्यों की अल्प बचत द्वारा समूह के माध्यम से बड़ी रकम का जमा होना।

☞ सहमूह की संस्तुति पर गैर लक्ष्य लोगों को ऋण वितरण में वृद्धि।

☞ पुराने एनपीए की वसूली की प्रबल संभावना।

☞ बैंक की छवि जनसामान्य में ऊँची होना।

☞ बैंक प्रबन्धन को सम्मान।

☞ जो ग्रामीण निर्धन अब तक बैंक सेवाओं से वंचित थे उन्हें बैंक सेवाओं के दायरे में लाया जा सकता है।

समाज को लाभ :

☞ समूह में संगठित होकर एक अच्छे समाज का निर्माण होता है।

☞ सामाजिक सुरक्षा।

☞ सामाजिक कुरीतियों में कमी से जीवन स्तर में सुधार।

☞ महिलाओं की विकास से सहभागिता।

3. इस कार्यक्रम में नया क्या है ?

☞ एक तरह से यह गरीबों का अपना छोटा बैंक है तथा इसको सही रूप से चलाने के लिए नियम भी स्वयं बनाने हैं।

☞ पंजीकरण की आवश्यकता नहीं है।

☞ समूह को सरकारी मान्यता प्राप्त है क्योंकि भारतीय रिजर्व बैंक तथा नाबार्ड द्वारा इस कार्यक्रम को विशेष मंजूरी दी गई है।

☞ समूह का गठन स्वैच्छिक संगठन के कार्यकर्ता, गांव के शिक्षक, कर्मचारी व निर्धन लोग स्वयं कर सकते हैं।

☞ परिपक्व समूह सामाजिक कार्य में भी भाग लेते हैं।